रालेगण सिद्धी

एक अल्प परिचय

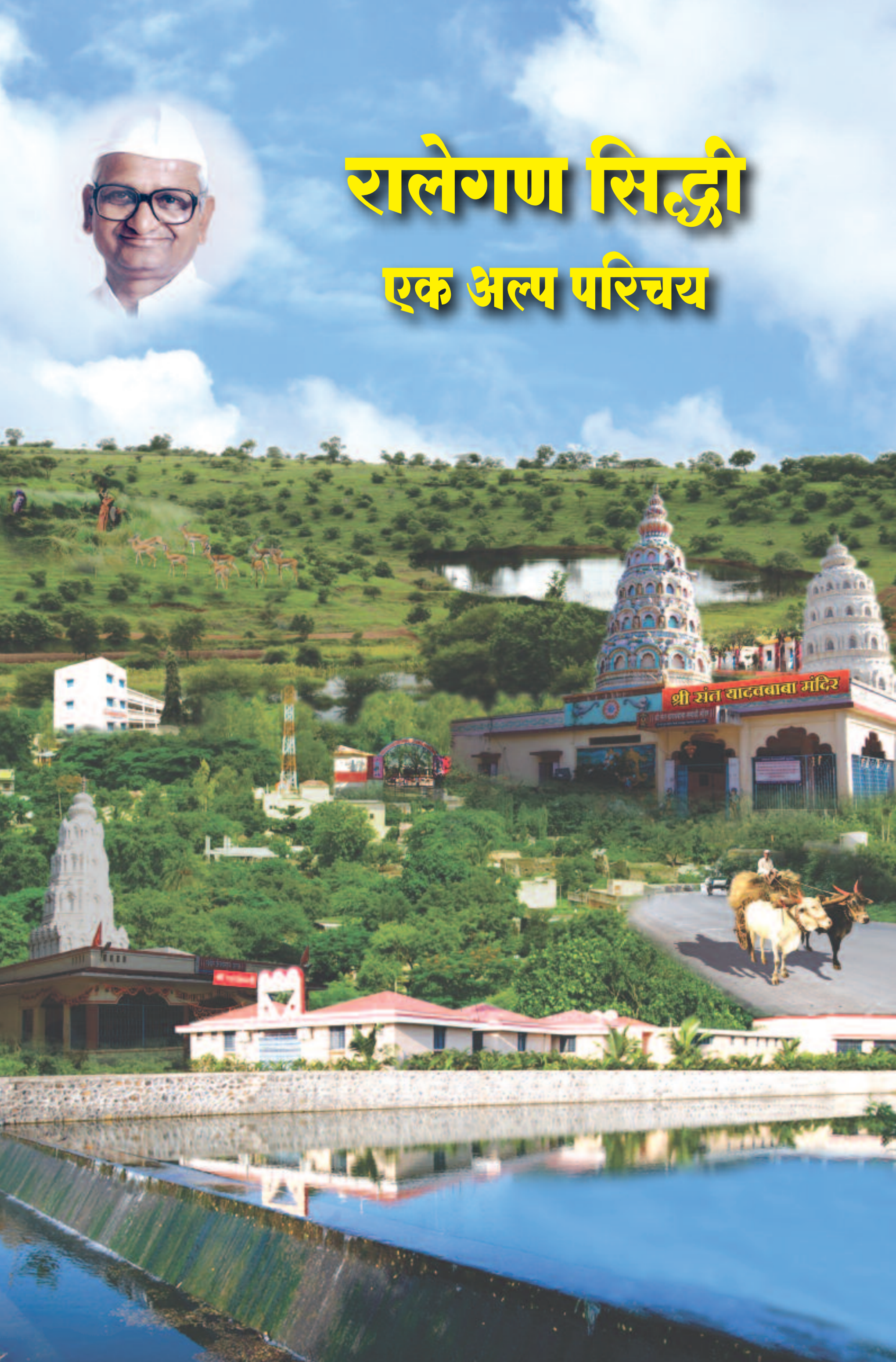

रालेगणसिद्धी 2500 लोगों की आबादी वाला एक अकालग्रस्त गाँव है। यहां साल में 400 से 500 मि.मि. बारिश होती है जितनी राज्य के कई हिस्सों में एक दिन में होती है। एक तो बारिश कम होती है और जो होती है, वह पानी भी कहीं अवरोध न होने से बह जाता था। फिर अप्रैल, मई के महीनों में पानी की कमी महसूस होती थी। गाँव के कुल भौगोलिक क्षेत्र में खेती की 1700 एकड़ ज़मीन में से केवल 300- 400 एकड़ क्षेत्र में एक फसल के लिए भी पर्याप्त पानी नहीं था। इससे गाँव के 70-80 प्रतिशत लोगों के लिए सालभर के लिए भी अनाज पूरा नहीं पड़ता था। फिर ना हाथों को काम, ना खाने को रोटी इस हालत में लोग गाँव के बाहर जा कर मजदूरी कर रहे थे। अधिकतर लोग आधे पेट से भूखे ही सोते थे।

1940 से 1950 के दशक में ना हाथों को काम, ना खाने को रोटी इस हालत में पेट पालने के लिये गाँव में 35 से 40 शराब की भट्टियाँ शुरू हुई। गाँव इस दशा में चल रहा था। ऐसे गाँव में परिवर्तन लाने के लिये, विदेशों और राज्य के किसी उद्योगपति से चन्दा न लेकर, केवल गाँव के लोग इकठ्ठे हुए, राजनैतिक पार्टियों की राजनीति को गाँव के बाहर रखा और संगठित होकर सरकार की जलग्रहण क्षेत्र के विकास और ग्रामीण विकास की योजना की कार्रवाई शुरू की। गाँव के लोगों का सहयोग बढाने के लिये ग्रामसभा ने निर्णय किया कि हर घर से दो लोग महीने में एक दिन सार्वजनिक कामों के लिये श्रमदान करेंगे। गाँव के विकास के कामों के लिये लोगों को केवल शब्दों से ज्ञान नहीं बाँटा जा सकता। जो लोग भूखे हैं, उन्हें अगर दो कौर रोटी नहीं मिलती, तो वे हमारी बात नहीं सुनेंगे। रोटी की समस्या के हल के लिये जलग्रहण क्षेत्र का विकास एक अच्छा विकल्प था, इसीलिए उसे प्राथमिकता देकर गाँव में जलग्रहण क्षेत्र के विकास का काम शुरू हुआ। सरकारी योजना, लोगों का सहयोग और आवश्यकतानुसार बैंक से लिए गए क़र्ज़ के त्रिवेणी संगम से गाँव के विकास का पहिया तेज़ी से दौडने लगा। गाँव का विकास करते समय प्रकृति के शोषण द्वारा किया गया विकास शाश्वत नहीं होता। वह विकास नहीं, विनाश ही होगा। प्रकृति की देन का सही उपयोग कर व्यक्ति, परिवार और गाँव का विकास ही शाश्वत विकास है। जलग्रह क्षेत्र का विकास इसका एक मार्ग है। इस कार्यक्रम में प्रकृति का शोषण नहीं होता।

जलग्रह क्षेत्र के विकास का काम शुरू होने के बाद गाँव मे मिट्टी के 45 जल निकास बंडिंग (बांध) किए। सीमेंट की 10 चेकडैम बनाई गई। 16 गॅबियन डैम बनाई गई। एक बडा रिसाव तालाब बनाया गया। 300 एकड़ बंजर ज़मीन पर 1X1 मीटर के डीप सिसिटी बनाए गए। बारिश के साथ बह जाने वाली गाँव की मिट्टी को जगह पर रोक रखने के लिए लूज बोल्डर स्ट्रक्चर बनाए गए। गाँव मे तीन लाख पेड लगाकर उन्हें जीवित रखा। इसके लिए गाँव के लोगों ने जानवरों को चरने के लिए खुले में न छोडने का

सीमेंट डैम

सीसीटी

रिसाव तालाब

चेक डैम

खेत तालाब

मिट्टी का नाला बांध

कुआँ

गॅबीयन डैम

पुनर्भरण कुआँ

(चराईबंदी) निर्णय किया। घास में ऐसी शक्ति है जो मिट्टी को पकडकर रखती है। बंजर ज़मीन पर उगे हुए चारे को काटकर जानवरों को देना चाहिए। जो उपजाऊ मिट्टी पानी के साथ नदियों में, बाँधों में बह जाती थी, वह (टॉप सॉईल) गाँव में ही बची रही। इस प्रकार गाँव में 'चोटी से नीचे तक' (टॉप टू बॉटम) तरीके से मिट्टी और पानी गाँव में ही रोकने का प्रयास किया। ज़मीन का भूमिगत जलस्तर बढ गया। पहले गाँव में केवल 35 कुएँ थे। अब गाँव में 135 कुएँ हैं। पहले 300 से 400 एकड़ जमीन पर एक फसल के लिए भी पानी कम पडता था, वहीं आज 1200 एकड़ जमीन पर दो फसलें मिल रही हैं। पहले

सालभर का अनाज खेत से न मिलने के कारण बाहर से अनाज खरीदना पडता था। आज गाँव पेटभर अनाज पुरा होकर बाहर बेच रहा है। सब्जियों, प्याज का उत्पादन बढा है। हर साल 100 से 150 ट्रक प्याज बेचने के लिए बाहर जाने लगा है। पहले मुश्किल से 300 से 400 लीटर दूध बाहर जाता था, आज हर रोज 6 हजार लीटर दूध बाहर जा रहा है

और लगभग 2 लाख रुपये हर दिन गाँव में आ रहा है। गाँव की पूरी अर्थव्यवस्था ही बदल गई। पहले बेरोजगारी एक बडी समस्या थी। आज गाँव के युवा अपनी खेती के साथ साथ दूध का धंधा कर रहे हैं और बेरोजगारी का हल निकल आया है। पहले गाँव के लोग बाहर जाकर मजदूरी कर रहे थे, आज गाँव के अंदर चार मजदूर नहीं मिलते हैं। पहले गाँव में झुग्गियाँ थीं, आज कितने ही मकान आरसीसी से बने हैं। एक ज़माने में, 1935 में गाँव में कोई पैडल साईकल लाता, तो लोग उसे देखने जाते थे। आज 400 घरों के गाँव में 215 मोटरसाइकिलें हैं। 52 कारें, 11 ट्रॅक्टर, 25 टेम्पो भी गाँव में आ चुके हैं। इसका कारण है गाँव की अर्थव्यवस्था में आया बदलाव। गाँव की **आदर्श ग्रामीण सहकारी पतसंस्था** नामक क्रेडिट सोसायटी में गाँव के लोगों ने 10 करोड़ रुपयों के डिपॉजिट रखे हैं। बँक ऑफ महाराष्ट्र में 10 करोड रुपये डिपॉजिट रखा है। महिलाओं के सात बचत समूह हैं और उनके पास 10 लाख रुपयों के डिपॉज़िट हैं। पूर्व सैनिक महिला स्वयं सहायता बचत समूहों के पास 16 लाख रुपयों के डिपॉज़िट हैं। 19 लाख 22 हजार रुपये कर्ज के रूप में दिए गए हैं। और सोने-चांदी के लाखों रुपयों के जेवर बनाए वह अलग है। एक अकालग्रस्त गाँव की यह आज की छवि है, जहाँ कुछ साल पहले लोग मजदूरी के लिए गाँव के बाहर जाते थे, भूखे सोते थे। उस गाँव में यह बदलाव आया है।

ऐसा भी देखने में आता है कि कभी-कभी जब गांव की अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी होती है तो कुछ लोगों की नीति में गिरावट आती है। बुरी आदतों का प्रमाण बढ़ा हुआ नज़र आता है। लोग मैं और मेरा के आगे जाकर देखते ही नहीं। रालेगणसिद्धि परिवार ने इस बात का बहुत ध्यान रखा है। जिस गांव में पहले 35 से 40 शराब की भट्टियां थीं, वहां आज दस-बारह किराने की दुकानें हैं। पिछले बीस सालों से गांव की किसी भी

दुकान में सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू और गुटका बेचने के लिए नहीं रखा गया। बीस साल पहले होली के त्योहार पर गांव के युवकों ने ग्रामसभा रखी और फैसला किया कि केवल लकड़ी, उपलों की होली जलाना सही नहीं है, इससे प्रदूषण फैलता है। होली तो दुर्गुणों और दुर्विचारों की होनी चाहिए। इसीलिए गांव के सभी युवकों ने दुकानदारों को बुलाकर उनके साथ विचार-विमर्श किया और सभी दुकानों में बेचने के लिए रखे गए सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू और गुटका पैसे देकर खरीदे और होली के दिन उनकी होली जलाई। तबसे पिछले बीस सालों में गांव की किसी भी दुकान में सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू और गुटका नहीं बेचा जाता। आजतक कभी ऐसा सुनने में नहीं आया कि सिगरेट, बीड़ी पीकर या तंबाकू, गुटका खाकर कोई युवा पहलवान बना हो, हां लेकिन कर्करोग से ग्रसित होने के उदाहरण अवश्य हैं। जिन वस्तुओं से शरीर को कोई उपयोग नहीं होता बल्कि नुकसान होता है, ऐसी वस्तुओं का उपयोग करके बीमारी को निमंत्रण देना ठीक नहीं है, ऐसा ही विचार करते हुए यह फैसला किया गया। कभी-कभी कुछ गांवों में ऐसा भी देखने को मिलता है कि जलग्रह क्षेत्र का विकास हुआ, खेतों में पानी बढ़ा, पैसा बढ़ा कि गांव में नशीला पानी (शराब) भी बढ़ता है और जलग्रह क्षेत्र के विकास के पानी से मिला पैसा इस नशीले पानी में बह जाता है, तो ऐसी स्थिति में विकास कैसे होगा?

प्याज रोपण

रालेगणसिद्धि परिवार के जलग्रह क्षेत्र के विकास के कारण पैसा बढ़ता गया और रालेगणसिद्धि परिवार ने उस पैसे का उपयोग उचित प्रकार से किया। श्री यादवबाबा के भव्य समाधि मंदिर को आरसीसी में बनाया गया जिसकी कीमत 50 लाख से भी अधिक है। पद्मावती देवी के मंदिर और महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। भैरवनाथ मंदिर को नए सिरे से बनाया गया। बहुत पुराने गणेश मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। मराठी विद्यालय का निर्माण नए सिरे से किया गया। माध्यमिक विद्यालय की इमारत की लागत 75 से 80 लाख रुपए है। इसमें से एक रुपया भी सरकार से या किसी और से चंदा नहीं लिया गया। व्यायामशाला, मंगल कार्यालय और शमशानघाट जैसी विविध इमारतों की लागत एक करोड़ रुपए से अधिक होगी। ऐसी कहावत है कि 'जो ना करे राजा वह करे प्रजा।' गांव के लोगों ने अपने दम पर इन इमारतों का निर्माण किया और इससे इन कामों के प्रति गांव के लोगों के मन में अपनेपन का रिश्ता बना। इनकी देखभाल भी वे ही करते हैं क्योंकि अपनेपन की भावना का निर्माण हुआ है। गांव के लोग अपना समझकर उनकी

देखभाल करते हैं। आज अनेक गाँवों में यह स्थिति है कि अगर सरकारी इमारतों के खिड़की-दरवाजे कोई निकालकर ले जाए तो भी किसी को परवाह नहीं होती। ऐसी परिस्थिति अनेक गाँवों में हैं। ऐसी परिस्थिति में रालेगणसिद्धि परिवार ने विकास के यह सभी काम करते समय बाहर कहीं से भी चंदा नहीं लिया। क्योंकि विनोबाजी कहते थे कि

संत यादवबाबा मंदिर

पद्मावती मंदिर

दान इंसान को नादान बना देता है, हाथ फैलाना सिखाता है। इसके कारण इंसान में लाचारी का निर्माण होता है। इंसान को स्वाभिमान सिखाना चाहिए, स्वाभिमान हमारी उच्च परंपरा है। लाचारी नहीं चाहिए। सवाल यह उठता है कि क्या अन्य दूसरे गाँवों को भी चंदा नहीं ले ना चाहिए? सभी गाँ वों को राले गणसिद्धि का अनुकरण करना संभव नहीं है लेकिन जिस प्रकार घर में घुटने चलनेवाले बालक को चलना सिखाने के लिए माता-पिता गड़वा (वॉकर) बनाकर देते हैं। उसकी सहायता से बालक चलना सीखता है। चलना सीखने के बाद गड़वा (वॉकर) छोड़ देना चाहिए। यदि गड़वा जीवनभर लेकर चलने की आदत हो गई तो इंसान जीवनभर के लिए अपाहिज हो जाता है। आज कई गाँव के लोगों को आदत हो गई है की गाँव के लिए किसीने देना और बात हमने करना यह ठिक नहीं है।

गांव का विकास करते समय ऊंची-ऊंची इमारतों के निर्माण को विकास नहीं कहते। जिन लोगों के लिए ऊंची इमारतों का निर्माण करना है उन लोगों का निर्माण होना चाहिए। अपने लिए जीते समय अपने पड़ोसी, समाज, गांव आदि को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन में से एक, दो, तीन घंटे जितना भी संभव हो उतना समय गांव के लिए निष्काम भाव से देना यानि सच्चा विकास है। हमारा इतिहास भी हमें यही बताता है कि इंसान अपने व्यक्तिगत जीवन में चाहे लखपति हो या करोड़पति, केवल खुद के लिए जीनेवाले लोग हमेशा के लिए मर जाते हैं। जो लोग अपने पड़ोस, गांव, समाज, देश का सोच विचार करते हुए समाज और गांव के लिए कार्य करते हुए मरते हैं, वे लोग हमेशा

के लिए जीवित रहते हैं। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ समय अपने गांव के लिए ज़रूर देना चाहिए। जब तक गाँव का विकास नहीं होगा तब तक देश का सही विकास नहीं होगा। हम पैदा होते समय रोते हुए आए लेकिन लोगों ने खुशियाँ मनायीं। नामकरण हुआ, मिठाई बांटी गई। अब प्रत्येक व्यक्ति को जीवन से जाते समय ऐसा काम करना चाहिए कि हम हंसते हुए जाएं और हमारे जाते समय लोग रोएं। अगर लोग हमारे लिए ऐसा कहें कि सौ साल जिया लेकिन चलो अच्छा हुआ कि परेशानी खत्म हुई तो ऐसा जीवन जीने का क्या फायदा?

गांव-गांव को जगाओ। भेदभाव को जड़ से नष्ट करो
कहते हैं तुकडोजी। गांव के विकास का दीपक जलाओ।।

गांव एक परिवार की भावना विकसित करने के लिए जाति-पांति का भेदभाव मिटाना ज़रूरी था। गांव के पिछड़े समाज को पहले गांव के मंदिर में प्रवेश निषेध था, पीने के पानी के लिए अलग कुआँ था। गांव में सामूहिक भोजन के समय उन्हें खाना खाने के लिए अलग बैठाया जाता था। उस गांव में पिछड़े समाज के ऊपर 60 हज़ार रुपए बैंक का कर्ज था जिसे वे चुका नहीं पा रहे थे। गांव की ग्रामसभा में यह फैसला किया गया कि ग्रामवासी उनकी ज़मीन में श्रमदान करके पैदावार बढ़ाकर उनका क़र्ज़ चुकता करेंगे। दो साल तक गांव के लोगों ने उनकी ज़मीन में श्रमदान किया। पैदावार बढ़ाकर उनके क़र्ज़ को ग्रामवासियों ने चुकता किया। इस प्रकार एक गांव एक परिवार की भावना विकसित हुई।

एक अनोखा बैलपोला

गांव में हर साल बैलपोला के त्योहार पर इस बात पर झगड़ा होता था कि गांव के सीमाद्वार में से सबसे पहले किसका बैल निकलेगा। प्रतिष्ठा, मान-पान के लिए कभी-कभी मारपीट भी हो जाती थी। अब पिछले बीस सालों से सीमाद्वार में से सबसे पहले पिछड़े समाज का बैल निकलता है उसके बाद गांव के बैल निकलते हैं। गांव के सभी कामों में पिछड़े समाज के लोग बराबर होते हैं। गांव से भेदभाव समाप्त हो गया है। गाँव की भोजन की पंगत में सब एकसाथ बैठते हैं। खाना बनाने, परोसने में सभी जातियों के लोग एकसाथ होते हैं। गांव के सामूहिक कार्यक्रमों के समय निमंत्रण पत्र छापते समय अंत में रालेगणसिद्धि परिवार लिखा जाता है। अन्य किसी का भी नाम नहीं लिखा जाता।

गांव का जन्मदिन।

लोग हर साल अपना जन्मदिन मनाते हैं। लेकिन रालेगणसिद्धि परिवार हर साल अपने गांव का जन्मदिन मनाता है। ऐसे ही विचारों के कारण रालेगणसिद्धि गांव यानि एक

परिवार का निर्माण हुआ। गांव की सबसे बुजुर्ग स्त्री और बुजुर्ग पुरुष को अपने गांव के माता-पिता समझकर गांव की तरफ से उनके लिए नए कपड़े खरीदे जाते हैं। गांव की तरफ से माता-पिता के रूप में उनकी पूजा की जाती है। वे किसी भी जाति के हों वे हमारे माता-पिता हैं। गांव में एक साल में

जिन बच्चों का जन्म हुआ है उन सभी बच्चों के लिए गांव की तरफ से नए कपड़े सिलवाए जाते हैं। उनका सम्मान किया जाता है क्योंकि यह बच्चे हमारे गांव की, देश की संपत्ति हैं। गांव में पिछले एक साल में जिन युवकों का विवाह हुआ और जो युवतियां विवाह करके बहु बनकर हमारे गांव में आयीं वे बहुएं केवल उन परिवार की ही नहीं, गांव की भी हैं। ऐसी सभी बहुओं की गोद साड़ी-चोली, सुहाग की वस्तुएं, नारियल से भरी जाती है। क्योंकि वे अपने गांव की बहुएं हैं। गांव के जिन युवकों ने विविध क्षेत्रों में निपुणता प्राप्त की है ऐसे युवकों को शॉल, श्रीफल और प्रमाणपत्र देकर उनका सम्मान किया जाता है।

गांव के विविध क्षेत्रों में योगदान देनेवाले व्यक्तियों का सम्मान कृतज्ञतापूर्वक किया जाता है और कार्यक्रम के अंत में सबको गांव की तरफ से भोजन दिया जाता है। इस कार्यक्रम के कारण इस भावना का विकास होता है कि हम सब ग्रामवासी एक परिवार हैं। स्वार्थ बढ़ने के कारण रालेगण सिद्धी में रामराज्य नहीं आया।मतभेद हो सकते हैं लेकिन यहां फ़र्क यह है कि जिस प्रकार घर में बर्तन से बर्तन टकराने पर आवाज होती है और बाद में थम जाती है उसी प्रकार मतभेद भूल जाते हैं।

गांव की ग्रामदेवी पद्मावती देवी का मेला सालोंसाल से चलता आ रहा है। पहले मेले के दिन बकरे, मुर्गों की बलि दी जाती थी। गांव के युवकों ने 35 साल पहले फैसला लिया कि बकरे, मुर्गे बलि देनेवाले की भावना होती है। देवी के प्रति श्रद्धा होती है। हम उनकी भावनाओं में रुकावट नहीं बनेंगे लेकिन यह बताएंगे कि जिन्हें देवी को बकरों, मुर्गों की बलि देनी है वे दें लेकिन देवी के नाम से दी गई बलि देवी को ही अर्पण करें, आप ना खाएं। युवकों ने गाड़ी भरकर लकडियां लाकर देवी के मंदिर के सामने उन लकड़ियों का होम रचाया और बलि देनेवाले लोगों से कहा कि देवी के नाम पर काटे गए बकरे, मुर्गे लकड़ियों के होम में डालेंगे, उन्हें खाया नहीं जाएगा। आप देवी के नाम से बलि दे

रहे हैं तो देवी को अर्पण कीजिए। खाने के लिए मना करने पर किसी ने भी बकरे, मुर्गे नहीं काटे। सब वापिस ले गए। देवी के नाम पर पशुबलि देना और नाते-रिश्तेदारों को बुलाकर दो दिन दावत करने में कैसी भक्ति और कैसी सेवा? 35 साल से आजतक देवी को पूरणपोली का भोग लगाया जाता है। मांसाहार का नहीं। देवी ने रालेगणसिद्धि परिवार का कुछ भी बुरा नहीं किया बल्कि अच्छा ही किया है। संत तुकडोजी महाराज कहते हैं,

देवी के नाम पर। देते हैं कुछ जीवन की बलि
बंद करो प्रथा ऐसी। भावना सुधारकर लोगों की।।

वेस्ट से बेस्ट

रालेगणसिद्धि के माध्यमिक विद्यालय में एक हजार विद्यार्थी हैं। छात्रावास में 300 विद्यार्थी हैं। इन सभी विद्यार्थियों के यूरिन, शौच, रसोईघर की जूठन, प्लेट धोकर निकली जूठन के लिए 6 से 7 सेप्टिक टैंक बनाकर यह सारा वेस्ट मटेरियल सेप्टिक टैंक में डाला जाता है और उससे बननेवाली खाद परिसर के सभी वृक्षों को टपकन (ड्रीप इरिगेशन) सिंचाई के जरिए दी जाती है। जो वेस्ट था वह बेस्ट बन गया।

2 मेगावैट सोलर प्रोजेक्ट

ईश्वर ने हमें सूर्य की रोशनी और हवा के रूप में नियामत दी है इसीलिए रालेगणसिद्धि में छात्रावास, हिंद स्वराज ट्रस्ट, रसोईघर और बाथरूम के लिए सोलर सिस्टम लगाया गया है। अब 2 मेगावैट का बड़ा सोलर प्रोजेक्ट बनाकर 5 से 6 गाँवों को बिजली बोर्ड की तरफ से बिजली मुहैया कराई जाती है। आज के समय में सोलर का उपयोग एक आवश्यकता है। हिंद स्वराज ट्रस्ट के नए कार्यालय और सभी कमरों में बिजली बोर्ड की जो बिजली इस्तेमाल की जाती थी उसका बिल आठ हजार रुपए महीना आता था। अब 15 किलोवैट सोलर पर बिजली निर्माण होने से हर साल बिजली के बिल के सालाना 1 लाख रुपए बचते हैं। इसके लिए एक ही बार खर्च करना पड़ता है। प्रदूषण भी नहीं होता। बिजली निर्माण में कोयला जलाया जाता है। उस से प्रदुषण जादा बढता है। रालेगण सिद्धी में अलग अलग जगह पर सोलर प्लांट लग गए है।

हिंद स्वराज ट्रस्ट राज्य और देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जलग्रहण क्षेत्र विकास, ग्रामविकास प्रशिक्षण देने का कार्य करता है। पिछले बीस सालों में आजतक 22

हजार लोगों को सरकारी अनुदान ना लेते हुए प्रशिक्षण दिया गया है। रालेगणसिद्धि परिवार को पिछले तीस वर्षों में जो नक़द पुरस्कार मिले हैं उनमें अमरीका, दक्षिण कोरिया, कनाडा, सूडान और अपने देश के विभिन्न स्तरों के करोड़ों रुपयों के पुरस्कार मिले हैं जिनका स्वामी विवेकानंद कृतज्ञता निधि नामक ट्रस्ट बनाया गया है। उससे सामाजिक कार्य किए जाते हैं। भारत के राष्ट्रपति जी ने पद्मश्री, पद्मभुषण पुरस्कार दिए है। यह एक प्रयत्न है कि जिस समाज ने हमें इतना कुछ दिया है उसे इन कार्यों के ज़रिए वापस किया जाए।

संत यादवबाबा शिक्षण प्रसारक मंडल

नामक संस्था पंजीकृत करके 5 वीं से 12वीं तक का विद्यालय चलाया जाता है। इस विद्यालय के लिए 8 किसानों ने 12 एकड़ जमीन स्कुल के लिए दान में दी है। सरकार या बाहर से अन्य किसी की भी सहायता ना लेते हुए रालेगणसिद्धि परिवार ने अपने कठिन परिश्रम से 75 से 82 लाख रुपए कीमत की इमारत का निर्माण किया है। एक कहावत है

'जो ना करे राजा वह करे प्रजा'। इस विद्यालय में महाराष्ट्र के अनुत्तीर्ण होनेवाले, सिगरेट पीनेवाले, तंबाकू-गुटखा खानेवाले अय्याशी करनेवाले बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। पहले से ही अच्छे बच्चों को अच्छा करना कोई विशेषता नहीं है बल्कि जो बच्चे बर्बाद हो रहे हैं, माता-पिता के हाथ से निकल गए हैं ऐसे बच्चों को प्रवेश देकर उन बच्चों को अच्छे संस्कार देकर सुधारने का महत्वपूर्ण कार्य रालेगणसिद्धि परिवार करता है। ऐसे बच्चों को सुधारणा आसान कार्य नहीं है। बहुत मुश्किल काम है। लेकिन रालेगणसिद्धि परिवार ने एक छोटासा परीक्षण किया जो सफल रहा। गांव में पहली से दसवीं और 11वीं और 12वीं तक की शिक्षा की सुविधा है। चार साल पहले सिर्फ गांव के लोगों से चंदा लेकर सभी कक्षाओं को डिजिटल किया गया है। लोगों से चंदा लेकर माध्यमिक विद्यालय में 85 कंप्यूटर लगाए गए हैं। 5वीं से 10वीं और 11वीं, 12वीं के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग प्रयोगशालाएं बनायीं गयीं हैं। हर क्लास रूम में सीसीटीव्ही कैमरे लगाए है और छोटे से गांव में खेलने के लिए चार एकड़ का सुसज्ज मैदान बनाया गया है। उसी प्रकार व्यायामशाला का निर्माण भी चल रहा है क्योंकि ऐसा प्रयत्न है कि आज के विद्यार्थी को शरीर, मन और बुद्धि तीनों से विकसित होने की आवश्यकता है। तब वह आदर्श नागरिक बन सकता है।

संगणक कक्ष
(माध्य. एवं उच्च
माध्यमिक विद्यालय)

संगणक कक्ष
(जि. प. प्राथमिक शाला)

लेझीम

कबड्डी

रस्सी मल्लखांब

झांज पथक

एन. सी. सी.

मल्लखांब

रालेगणसिद्धि परिवार ने पिछले 40 वर्षों में ग्रामविकास के अलग-अलग कार्य किए हैं, उन कामों की जानकारी लोगों को मिले इसके लिए गांव में जानकारी मिडीया केंद्र बनाया गया है। इस जानकारी केंद्र में रालेगणसिद्धि में हुए सभी ग्रामविकास व अन्य विकास कार्यों की जानकारी दी गई है।

उसी प्रकार पिछले 30 वर्षों में जनहित के लिए भ्रष्टाचार रोकने के लिए सूचना का अधिकार, सरकारी कार्यालय कामों में देरी होना (दफ्तर दिरंगाई), लोकपाल, शराबबंदी, जनता की पुकार, ग्रामसभा को अधिक अधिकार, ग्रामरक्षक दल जैसे जनहित के अलग-अलग दस कानून दिल्ली की संसद और राज्य की विधानसभा में बने हैं। उसका फायदा राज्य और देश की जनता को हो रहा है। पिछले 35 सालों में भ्रष्टाचार रोकने के लिए

जि. प. प्राथमिक शाला

डी. बी. एम. इंग्लीश मिडियम स्कूल

राज्य में और देश में कितने आंदोलन हुए उन सभी की जानकारी रालेगणसिद्धि गांव देखने आनेवालों को मिले इसके लिए आंदोलन जानकारी केंद्र बनाया गया है। इन दोनों जानकारी केंद्रों के लिए राज्य, देश या विदेश से कोई चंदा नहीं लिया गया है। उसके लिए **भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन न्यास** नामक ट्रस्ट बनाकर उसे धर्मदाय आयुक्त के यहां पंजीकृत किया गया है। यह आंदोलन इस ट्रस्ट, रालेगणसिद्धि परिवार और राज्य के विभिन्न भागों के कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया जाता है। जनता को इस आंदोलन की जानकारी देने के लिए, जानकारी केंद्र के लिए 40 लाख रुपए खर्च करके स्वतंत्र जानकारी केंद्र बनाया गया है। इसका उद्देश्य केवल इतना ही है कि ग्रामविकास और ग्रामविकास को लगी हुई भ्रष्टाचार की दीमक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन दोनों कार्यों के बिना गांव, समाज और देश का भविष्य उज्वल नहीं होगा। इसीलिए गांव में यह दो जानकारी केंद्र बनाए गए हैं। दोनों जानकारी केंद्र के लिए 80 लाख रुपए खर्च किए गए हैं। युवा कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलना यही इसका उद्देश्य है।

गांव में **श्री संत यादवबाबा मंदिर** में हर साल सात दिन का **अखंड हरिनाम सप्ताह (अध्यात्मिक कार्यक्रम)** मनाया जाता है। सात दिन कीर्तनकार, प्रवचनकार आकर गांववालों को आध्यात्मिक उपदेश देते हैं। इन सात दिनों में रोज़ डेढ़ से दो हजार लोगों का भोजन बनाया जाता है। हर दिन गांववाले भोजन की पंगत बांट लेते हैं। उसमें भी पंगत प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा होती है। गांव की ग्रामदेवी पद्मावती देवी का यात्रोत्सव हर साल मनाया जाता है। उसी प्रकार नवरात्र में भी दस दिन कीर्तन, प्रवचन का कार्यक्रम होता है। उन दस दिनों में पूरे गांव में रोज़ कीर्तन के बाद भोजन दिया जाता है। व्रत करनेवालों को फलियार दिया जाता है।

अखंड हरिनाम सप्ताह

गांववाले भोजन की पंगत बांट लेते हैं। इस साल तो अगले साल की भोजन की पंगत अभी से लोगों से बांट ली है।

गांव के कुछ युवक एकसाथ मिलकर अनेक वर्षों से **'एक गांव एक गणपति'** कार्यक्रम मनाते हैं। भैरवनाथ का उत्सव मनाते हैं। राष्ट्रीय पुरुषों की जयंती, पुण्यतिथि मनाई जाती है। इस तरह के अनेक कार्यक्रम रालेगणसिद्धि परिवार मनाता है लेकिन सब कुछ स्वेच्छा से किया जाता है। चंदा इकट्ठा नहीं किया जाता है।

रालेगणसिद्धि परिवार और भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन न्यास ने बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को रोकने के लिए राज्य और देश में अहिंसा का रास्ता अपनाते हुए धरने, मोर्चे, मौन अनशन करते हुए सरकार को राज्य और देश के लिए 10 कानून बनाने के लिए मजबूर किया। इसके कारण राज्य और देश का भ्रष्टाचार काफी हद तक कम हुआ है।

रामलीला मैदान पर जाते समय

रामलीला मैदान, दिल्ली

तिहाड़ जेल से रिहा होते हुए

ग्रामविकास के यह काम हर गांव में हर युवा कर सकता है। केवल युवाओं का आचार-विचार पवित्र होना चाहिए, जीवन निष्कलंक होना चाहिए, जीवन में थोड़ा त्याग होना चाहिए और अपमान सहन करने की शक्ति होनी चाहिए और सत्य का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य के मार्ग पर चलने वालों को कठिनाइयां बहुत आती है। लेकिन सत्य कभी पराजित नहीं होता। अगर युवा ठान लें तो देश का उज्जवल भविष्य दूर नहीं है। प्रकृति का नियम है कि ज्वार, बाजरा, मक्का जैसी फसल में दानों से भरे हुए भुट्टे प्राप्त करने के लिए पहले एक दाना जमीन में बोना पड़ता है। एक दाना जमीन में नहीं गया तो दानों से भरे हुए भुट्टे कैसे मिलेंगे? जो दाने जमीन में नहीं जाते वे दाने आटे की चक्की

में जाते हैं। पिस जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं। लेकिन जमीन में बोए गए दाने नष्ट नहीं होते। वे हजारों दानों का निर्माण करते हैं।

युवकों को तय करना चाहिए कि जमीन में जाएं या चक्की में जाकर पिस जाएं। अण्णा हजारे ने 25वें साल की भरी जवानी में स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर एक बीज बनकर खुद को जमीन में बो देना तय किया। आज रालेगणसिद्धि जैसा गांव दानों से भरे हुए भुट्टे जैसा दिखने लगा है। पिछले 13 सालों में राज्य, देश-विदेश से 12 लाख लोगों ने इस गांव में आकर प्रेरणा प्राप्त की है। आपका गांव भी रालेगणसिद्धि जैसा हो सकता है। यह असंभव नहीं है लेकिन केवल लोगों को भाषणबाजी देकर नहीं होगा। भाषण के साथ कृति को जोडनेवाली लीडरशिप खड़ी होनी पड़ेगी। कथनी और करनी दोनों भी होना जरूरी है। लोगों को ग्यान की बातें बतानेवाले की तरफ सभी देखते हैं। वह सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक क्या करता है। वे क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, कैसे चलते हैं, कैसे बोलते हैं इसपर सभी गांववालों का ध्यान रहता है। इसीलिए बतानेवाले व्यक्ति का आचार-विचार शुद्ध होना चाहिए, जीवन निष्कलंक होना चाहिए, जीवन में बुरी आदतों के दाग नहीं होने चाहिए। उसके जीवन में थोड़ा त्याग होना चाहिए जनता की भलाई के लिए वह दीया के मुताबिक कितना जलता है यह दिखाई देना चाहिए। और अगर कोई हमारी निंदा करे, हमारा अपमान करे तो उसे सहन करने की शक्ति लीडरशिप में होनी चाहिए। अगर यह गुण हुए तो आपका गांव रालेगणसिद्धि से भी अच्छा हो सकता है। भगवतगीता का संदेश है, **कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेशु कदाचन।** फल की अपेक्षा ना करते हुए निष्काम भाव से किया हुआ हर काम सेवा कहलाता है। उससे आनंद प्राप्त होता है।

डीप सीसीटी.

अन्ना हजारे जैसे 25 साल का अल्पशिक्षित युवक अपने जीवन का ध्येय निश्चित करके काम में लग जाता है और धन-दौलत, सत्ता कुछ नहीं, एक मंदिर में जाकर फकीर जैसा जीवन व्यतीत करता है। अपने बैंक अकाउंट की किताब कहां रहता है उसे कुछ मालूम नहीं। गांव में खेती है, भाई है, परिवार है लेकिन पिछले 45 साल से घर में नहीं गए। यह एक उदाहरण है कि फ़ौज से मिलनेवाली पेंशन पर जीवनयापन करनेवाला युवक अगर ध्येयवादी बनकर मन में ठान ले तो अपने गांव, समाज, राज्य और देश के लिए कितना बड़ा काम कर सकता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई भी युवक अन्ना हजारे जैसा विवाह ना करे और मंदिर में रहे। ऐसा जीवन बिताना आसान नहीं है। बहुत ही कठिन है। लेकिन असंभव नहीं है। हर कार्यकर्ता ने विवाह करें, गृहस्थी बसाएं लेकिन छोटा परिवार ना करते हुए बडा परिवार करें। छोटे परिवार में दुःख होते हैं। जितना परिवार बड़ा होगा उतना जीवन में आनंद होता है। यह फर्क है। अन्ना हजारे ने विवाह नहीं किया लेकिन परिवार नहीं छूटा। छोटा परिवार के बजाय बड़ा परिवार बन गया। पहले गांव परिवार बन गया और अब पुरा देश परिवार बन गया है। बड़े परिवार के कारण जीवन में आनंद है।

हिरणों का समूह

73वें संविधान संशोधन में यह विचार किया गया है कि सत्ता का विकेंद्रीकरण करके उसे लोकतंत्र के जरिए नागरिकों के हाथ में कैसे दिया जाए। क्योंकि लोकतंत्र का यही अर्थ है लोगों का, लोगोंने, लोगों के लिए, लोगों की सहभागिता से जो चलता है वह लोकतंत्र। इसके लिए अब 73वें संविधान सुधार होकर सत्ता का विकेंद्रीकरण करके ग्रामविकास का पैसा वित्त आयोग के ज़रिए सीधे-सीधे हर गांव की ग्रामपंचायत में जमा होता है। पहले राज्य, जिला परिषद, पंचायत समिति में घूम-घूमकर आता था। अब ग्रामविकास का पैसा सीधा ग्राम पंचायत में आता है। ग्रामसभा दिल्ली या राज्य की संसद के समान होती है इसीलिए यह पैसा जनता का होने की वजह से ग्राम पंचायत ने ग्रामसभा को पूछकर यह पैसा गांव की उन्नति के लिए खर्च होना चाहिए। महाराष्ट्र सरकार ने ग्रामसभा को अधिक अधिकार का कानून बनाया है कि यदि गांव में आया हुआ विकास कार्य का पैसा ग्रामपंचायत ने ग्रामसभा से बिना पूछे ग्राम पंचायत ने खर्च कर दिया तो गांव के 20 प्रतिशत मतदाता जिला परिषद सीईओ के पास जांच की अर्जी दे सकते हैं। एक महीने में जांच होगी। ग्रामसभा से बिना पूछे ग्राम पंचायत ने पैसा खर्च किया तो सरपंच, उपसरपंच निलंबित होंगे। इसीलिए गांव में आया हुआ विकास कार्य का पैसा ग्राम पंचायत ने ग्रामसभा से पूछकर ही खर्च किया जाएगा। यह सच्चा लोकतंत्र है। रालेगणसिद्धि परिवार पिछले चालीस साल से ग्रामसभा के विश्वास से सभी योजनाओं को चलाते हैं जिससे पारदर्शकता निर्माण होती है और विकास तेज़ी से हुआ है। पारदर्शकता के कारण किसी को कोई संदेह नहीं होता। ग्राम पंचायत कार्यकारी मंडल (एक्झीकेटीव बॉडी) है। ग्रामसभा गाँव की संसद है।

गांव के सर्वांगीण विकास के लिए ग्रामसभा का निर्णय अंतिम समझा जाए। क्योंकि हमारे संविधान के 243/क में साफ तौर से कहा गया है कि ग्रामसभा गांव के स्तर पर राज्य की विधायिका कानून जैसे अधिकारों का इस्तेमाल कर सकती है और वैसे ही कार्य भी कर सकती है। ग्रामसभा ग्राम पंचायत से श्रेष्ठ है। यही नहीं, लोकसभा, विधानसभा से भी ऊंचा स्थान ग्रामसभा का है। क्योंकि हमारे लोकसभा और विधानसभा के सदस्यों को ग्रामसभा ही चुनकर भेजती है। ग्रामसभा लोकसभा और विधानसभा की जननी है ऐसे कहा तो गलत नहीं होगा। क्योंकी ग्रामसभा को किसी ने बनाया नहीं, उसे संविधान ने बनाया है। हर (ग्रामसभा सदस्य) मतदाता 18 वर्ष पूर्ण करने पर मतदान का अधिकार प्राप्त करता है। एक बार मतदाता बनने के बाद वह आजीवन मतदाता रहता है यानि ग्रामसभा का सदस्य रहता है। उसके मरने के बाद ही ग्रामसभा का सदस्यत्व समाप्त होता है। यह ग्रामसभा स्वयंभू और सार्वभौम है। वह कभी नहीं बदलती। बल्कि हर पांच साल में ग्रामसभा, लोकसभा और विधानसभा को बदलती है। ग्रामसभा को कोई नहीं बदल सकता है। जैसे लोकसभा देश की संसद है, विधानसभा राज्य की संसद है, उसी प्रकार ग्रामसभा गांव की संसद है। ग्रामसभा ग्राम पंचायत से और विधानसभा लोकसभा से श्रेष्ठ है इसीलिए ग्राम विकास के लिए आया हुआ पैसा ग्राम पंचायत के खाते में जमा होता है सिर्फ हिसाब रखने के लिए लेकिन उसे खर्च करते समय ग्रामसभा से पूछकर खर्च करना पड़ता है। यदि ऐसा नहीं हुआ और गांव के लोग जागृत हो गए तो जिस गांव की पंचायत ग्रामसभा से बिना पूछे अपनी मर्जी से पैसा खर्च करेगी उस ग्रामपंचायत को लोग कानूनन निलंबित कर देंगे।

संपर्क

भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन न्यास

मु. पो. रालेगणसिद्धी,

तह. पारनेर,

जि. अहमदनगर 414302

☎ 91-02488-240401

हिंद स्वराज ट्रस्ट

जलग्रहण विकास एवं

ग्रामीण विकास मार्गदर्शन केंद

मु. पो. रालेगणसिद्धी, तह. पारनेर,

जि. अहमदनगर 414302

☎ 91-02488-240227

annahazareoffice@gmail.com

Facebook Page: www.facebook.com/KBAnnaHazare

www.annahazare.org